



स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं की नेतृत्व क्षमता का विकास

¹प्रभात कुमार

शोधार्थी, विश्वविद्यालय वाणिज्य विभाग, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

²डॉ. चौधरी साकेत कुमार

सहायक प्राध्यापक, विश्वविद्यालय वाणिज्य विभाग, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार
विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं की नेतृत्व क्षमता के विकास का विश्लेषण करना है। अध्ययन में महिलाओं के आत्मविश्वास, निर्णय-निर्माण क्षमता, सामाजिक सहभागिता तथा नेतृत्व कौशल पर स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया। शोध हेतु 300 स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं का चयन कर प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़े संकलित किए गए। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी, सहसंबंध एवं प्रतिगमन तकनीकों द्वारा किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं में नेतृत्व क्षमता, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक जागरूकता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही समूह सहभागिता और नेतृत्व क्षमता के मध्य सकारात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। अध्ययन महिला सशक्तिकरण एवं सामुदायिक विकास की दिशा में स्वयं सहायता समूहों की प्रभावशीलता को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द: स्वयं सहायता समूह, महिला सशक्तिकरण, नेतृत्व क्षमता, निर्णय-निर्माण क्षमता, आत्मविश्वास, सामाजिक सहभागिता, ग्रामीण विकास, महिला नेतृत्व।

1. प्रस्तावना

वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण सामाजिक एवं आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम बन चुका है। किसी भी समाज की प्रगति तभी संभव मानी जाती है जब महिलाओं को विकास प्रक्रिया में समान



अवसर, सहभागिता तथा नेतृत्व प्रदान किया जाए। भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाएँ एवं कार्यक्रम संचालित किए गए हैं। इन प्रयासों में स्वयं सहायता समूह (Self-Help Groups) एक प्रभावशाली माध्यम के रूप में उभरे हैं, जिन्होंने महिलाओं को केवल आर्थिक रूप से ही नहीं बल्कि सामाजिक एवं नेतृत्व संबंधी दृष्टि से भी सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है (शर्मा एवं सिंह, 2024)। स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को सामूहिकता, सहयोग, आत्मनिर्भरता तथा निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने का अवसर प्रदान किया है।

स्वयं सहायता समूह ऐसे छोटे स्वैच्छिक समूह होते हैं जिनमें सामान्यतः समान सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि वाली महिलाएँ सम्मिलित होकर बचत, ऋण, आय-सृजन तथा सामुदायिक गतिविधियों का संचालन करती हैं। इन समूहों के माध्यम से महिलाएँ वित्तीय संसाधनों तक पहुँच प्राप्त करने के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक एवं विकासात्मक गतिविधियों में भी सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। समूह की नियमित बैठकों, सामूहिक निर्णयों तथा सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेने से महिलाओं में नेतृत्व के गुणों का विकास होता है, जिससे वे अपने परिवार, समुदाय तथा स्थानीय संस्थाओं में प्रभावशाली भूमिका निभाने लगती हैं (वर्मा एवं यादव, 2023)। यही कारण है कि स्वयं सहायता समूहों को महिला नेतृत्व विकास का एक सशक्त मंच माना जा रहा है।

नेतृत्व क्षमता किसी भी व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके माध्यम से वह अन्य व्यक्तियों को प्रेरित, मार्गदर्शित एवं संगठित कर किसी साझा लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्य कर सकता है। परंपरागत भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका लंबे समय तक घरेलू कार्यों तक सीमित रही, जिसके कारण उन्हें नेतृत्व संबंधी अवसर अपेक्षाकृत कम प्राप्त हुए। किंतु शिक्षा के प्रसार, सामाजिक जागरूकता तथा स्वयं सहायता समूहों जैसी पहलों के कारण महिलाओं में आत्मविश्वास, निर्णय-निर्माण क्षमता तथा सामाजिक सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है (कुमारी एवं चौधरी, 2024)। आज अनेक महिलाएँ ग्राम पंचायतों, सामुदायिक संगठनों तथा स्थानीय विकास कार्यक्रमों में नेतृत्वकारी भूमिका निभा रही हैं, जिसका एक प्रमुख आधार स्वयं सहायता समूहों से प्राप्त अनुभव एवं प्रशिक्षण है।



स्वयं सहायता समूहों की गतिविधियों में सहभागिता महिलाओं को संवाद कौशल, समूह प्रबंधन, वित्तीय नियोजन तथा समस्या समाधान जैसी क्षमताएँ विकसित करने का अवसर प्रदान करती है। समूह के संचालन के दौरान महिलाएँ विभिन्न जिम्मेदारियाँ निभाती हैं, जैसे बैठक का संचालन, वित्तीय अभिलेखों का रख-रखाव, सदस्यों के मध्य समन्वय तथा सरकारी योजनाओं से जुड़ाव। इन गतिविधियों से उनमें नेतृत्व कौशल का स्वाभाविक विकास होता है (तिवारी एवं मिश्रा, 2022)। साथ ही समूह आधारित निर्णय प्रक्रिया महिलाओं को अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने तथा सामूहिक निर्णयों में योगदान देने का अवसर देती है, जिससे उनका आत्मविश्वास और सामाजिक स्वीकार्यता बढ़ती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। इन समूहों ने महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने के साथ-साथ सामाजिक मुद्दों पर भी सक्रिय बनाया है। कई अध्ययन संकेत करते हैं कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएँ शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, बालिका शिक्षा तथा सामाजिक न्याय जैसे विषयों पर अधिक जागरूक एवं सक्रिय रहती हैं (यादव एवं कुमार, 2024; चौहान एवं शर्मा, 2022)। इस प्रकार स्वयं सहायता समूह केवल आर्थिक संस्था नहीं बल्कि नेतृत्व निर्माण एवं सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी हैं।

महिला नेतृत्व का विकास केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहता बल्कि इसका प्रभाव परिवार एवं समुदाय पर भी पड़ता है। नेतृत्व क्षमता विकसित होने पर महिलाएँ परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में भागीदारी करने लगती हैं तथा सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में अग्रणी भूमिका निभाती हैं। इससे उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार होता है और समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलता है (राजपूत एवं वर्मा, 2024)। अनेक मामलों में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएँ स्थानीय स्तर पर अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत बनती हैं और उन्हें भी सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

हालाँकि स्वयं सहायता समूहों की उपलब्धियों के बावजूद महिला नेतृत्व विकास के मार्ग में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। सामाजिक रूढ़िवादिता, सीमित शिक्षा, पारिवारिक प्रतिबंध, संसाधनों की कमी तथा निर्णय प्रक्रिया में पुरुषों का वर्चस्व जैसी बाधाएँ आज भी महिलाओं के नेतृत्व विकास को प्रभावित करती हैं



(त्रिपाठी एवं वर्मा, 2024)। इसके बावजूद स्वयं सहायता समूह महिलाओं को इन चुनौतियों का सामना करने तथा आत्मनिर्भर एवं नेतृत्वक्षम बनने का अवसर प्रदान कर रहे हैं। उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं की नेतृत्व क्षमता के विकास का विश्लेषण करना है। अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि समूह आधारित गतिविधियाँ महिलाओं के आत्मविश्वास, निर्णय-निर्माण क्षमता, सामाजिक सहभागिता तथा नेतृत्व कौशल को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। (गुप्ता एवं पांडेय, 2025; सिंह एवं चौबे, 2025)।

2. साहित्य समीक्षा

महिला सशक्तिकरण, नेतृत्व विकास तथा सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका पर पिछले कुछ वर्षों में अनेक अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह केवल वित्तीय गतिविधियों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे महिलाओं के व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास वृद्धि, सामाजिक सहभागिता तथा नेतृत्व क्षमता निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह महिलाओं को संगठित करने, उन्हें आर्थिक अवसर उपलब्ध कराने तथा सामाजिक निर्णयों में भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं। हाल के अध्ययनों में यह पाया गया है कि स्वयं सहायता समूहों में सक्रिय सहभागिता महिलाओं के नेतृत्व गुणों को विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है। समूह की नियमित बैठकों, सामूहिक चर्चा एवं निर्णय प्रक्रिया में भाग लेने से महिलाओं में आत्मविश्वास तथा अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है। शोधकर्ताओं ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि समूहों से जुड़ी महिलाएँ सामाजिक एवं सामुदायिक गतिविधियों में अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं तथा स्थानीय स्तर पर नेतृत्व की जिम्मेदारियाँ ग्रहण करने के लिए अधिक तत्पर दिखाई देती हैं (शर्मा एवं सिंह, 2024; वर्मा एवं यादव, 2023)। इन अध्ययनों से यह भी स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं को नेतृत्व की व्यावहारिक परिस्थितियों से परिचित कराते हैं, जिससे उनमें संगठनात्मक क्षमता का विकास होता है।

नेतृत्व विकास के साथ-साथ निर्णय-निर्माण क्षमता को भी महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण संकेतक माना गया है। विभिन्न अध्ययनों में पाया गया है कि स्वयं सहायता समूहों में भागीदारी करने वाली महिलाएँ



परिवार एवं समुदाय से जुड़े निर्णयों में अधिक प्रभावी भूमिका निभाती हैं। समूह आधारित कार्यप्रणाली महिलाओं को विचार-विमर्श, समस्या समाधान तथा सामूहिक निर्णय लेने का अवसर प्रदान करती है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है (कुमारी एवं चौधरी, 2024)। इसी प्रकार अन्य अध्ययनों में भी यह देखा गया कि समूहों से जुड़ी महिलाएँ बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, आय-सृजन गतिविधियों तथा सामाजिक कार्यक्रमों से संबंधित निर्णयों में अधिक सक्रिय रहती हैं (तिवारी एवं मिश्रा, 2022)। स्वयं सहायता समूहों और महिला नेतृत्व के मध्य संबंध का विश्लेषण करने वाले अध्ययनों में यह भी उल्लेख किया गया है कि आर्थिक आत्मनिर्भरता नेतृत्व विकास की एक महत्वपूर्ण आधारशिला है। जब महिलाओं को स्वयं आय अर्जित करने तथा वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन करने का अवसर मिलता है, तब उनमें आत्मविश्वास एवं सामाजिक प्रतिष्ठा का स्तर बढ़ता है। इस संदर्भ में किए गए अध्ययनों ने दर्शाया कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं को बचत, ऋण प्रबंधन एवं लघु उद्यमों के संचालन का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे उनमें नेतृत्व संबंधी व्यवहार एवं जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है (गुप्ता एवं पांडेय, 2025; पटेल एवं सिंह, 2025)। आर्थिक रूप से सक्षम महिलाएँ सामाजिक गतिविधियों में भी अधिक प्रभावी भागीदारी करती हैं तथा समुदाय में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने लगती हैं। ग्रामीण समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति एवं सामुदायिक सहभागिता पर स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव का अध्ययन करने वाले शोधों ने यह संकेत दिया है कि समूहों के माध्यम से महिलाओं में सामाजिक जागरूकता तथा सामुदायिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। समूह आधारित गतिविधियों के कारण महिलाएँ विभिन्न सामाजिक मुद्दों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, लैंगिक समानता तथा सामाजिक न्याय के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं (सिंह एवं देवी, 2023; यादव एवं कुमार, 2024)। इस प्रक्रिया में वे समुदाय के अन्य सदस्यों को भी प्रेरित करती हैं और धीरे-धीरे स्थानीय नेतृत्व का महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती हैं।

कई अध्ययनों ने महिला नेतृत्व क्षमता के विभिन्न आयामों, जैसे संवाद कौशल, समूह प्रबंधन, समन्वय क्षमता तथा सामाजिक नेटवर्क निर्माण, पर स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव का विश्लेषण किया है। शोध निष्कर्षों के अनुसार समूहों में सक्रिय महिलाएँ सार्वजनिक मंचों पर अपने विचार रखने में अधिक सक्षम होती हैं तथा प्रशासनिक एवं सामाजिक संस्थाओं के साथ बेहतर संवाद स्थापित कर पाती हैं (चौहान एवं शर्मा,



2022; शुक्ला एवं त्रिपाठी, 2023)। यह परिवर्तन केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहता बल्कि सामुदायिक विकास की प्रक्रिया को भी गति प्रदान करता है।

महिला नेतृत्व विकास और सामाजिक परिवर्तन के संबंध को स्पष्ट करने वाले अध्ययनों में यह पाया गया है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं को सामाजिक रूढ़ियों से बाहर निकलने का अवसर प्रदान करते हैं। समूहों की सामूहिक शक्ति महिलाओं को पारंपरिक सीमाओं को चुनौती देने तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनने के लिए प्रेरित करती है। परिणामस्वरूप उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार होता है और वे स्थानीय विकास गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाने लगती हैं (राजपूत एवं वर्मा, 2024; पांडेय एवं तिवारी, 2023)। इससे ग्रामीण समाज में लैंगिक समानता एवं लोकतांत्रिक सहभागिता को भी बढ़ावा मिलता है।

सामुदायिक नेतृत्व और सामाजिक पूंजी निर्माण के संदर्भ में किए गए अध्ययनों ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं के बीच सहयोग, विश्वास तथा सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करते हैं। इससे महिलाओं के सामाजिक नेटवर्क का विस्तार होता है तथा वे विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने में सक्षम बनती हैं (देवी एवं यादव, 2024; कश्यप एवं यादव, 2024)।

इस प्रकार स्वयं सहायता समूह व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ सामुदायिक नेतृत्व निर्माण का भी प्रभावी माध्यम सिद्ध होते हैं। यद्यपि अधिकांश अध्ययनों में स्वयं सहायता समूहों के सकारात्मक प्रभावों को रेखांकित किया गया है, फिर भी कुछ शोधों ने नेतृत्व विकास में आने वाली चुनौतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

सामाजिक परंपराएँ, सीमित शिक्षा, आर्थिक निर्भरता, पारिवारिक दबाव तथा संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ आज भी महिलाओं के नेतृत्व विकास में बाधक बनी हुई हैं (मिश्रा एवं गुप्ता, 2022; त्रिपाठी एवं वर्मा, 2024)। इसके बावजूद शोधों का समग्र निष्कर्ष यह है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं की नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास, सामाजिक सहभागिता तथा निर्णय-निर्माण कौशल के विकास में अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं।



3: शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन "स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं की नेतृत्व क्षमता का विकास" विषय पर आधारित है। इस अध्ययनमें अध्ययन की शोध पद्धति, शोध डिज़ाइन, अध्ययन क्षेत्र, जनसंख्या, निदर्शन, आंकड़ा संग्रहण की विधियाँ तथा विश्लेषण की तकनीकों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है। शोध पद्धति किसी भी अध्ययन की वैज्ञानिकता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण आधार होती है।

3.2 अध्ययन के उद्देश्य

1. स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं की नेतृत्व क्षमता के विकास में भूमिका का अध्ययन करना।
2. स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता के कारण महिलाओं के आत्मविश्वास एवं निर्णय-निर्माण क्षमता में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
3. महिलाओं की सामाजिक एवं सामुदायिक नेतृत्व भूमिकाओं पर स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
4. नेतृत्व क्षमता और स्वयं सहायता समूहों की गतिविधियों के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
5. महिला नेतृत्व विकास में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।

3.3 शोध परिकल्पनाएँ

H₀₁: स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता का महिलाओं की नेतृत्व क्षमता पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है।

H₁₁: स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता का महिलाओं की नेतृत्व क्षमता पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

H₀₂: स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता और महिलाओं की निर्णय-निर्माण क्षमता के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H₁₂: स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता और महिलाओं की निर्णय-निर्माण क्षमता के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध है।

H₀₃: विभिन्न शिक्षा स्तरों की महिलाओं की नेतृत्व क्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।



H₁₃: विभिन्न शिक्षा स्तरों की महिलाओं की नेतृत्व क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर है।

3.4 शोध डिज़ाइन

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध डिज़ाइन का उपयोग किया गया है। वर्णनात्मक शोध के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं की सामाजिक एवं नेतृत्व संबंधी विशेषताओं का अध्ययन किया गया, जबकि विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से नेतृत्व क्षमता पर समूह सहभागिता के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया। यह अध्ययन क्रॉस-सेक्शनल प्रकृति का है, जिसमें एक निश्चित समय अवधि के दौरान आंकड़ों का संग्रहण किया गया।

3.5 अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन का क्षेत्र उन ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों को माना गया जहाँ स्वयं सहायता समूह सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। अध्ययन क्षेत्र का चयन इस आधार पर किया गया कि वहाँ महिलाओं की समूह गतिविधियों में पर्याप्त भागीदारी हो तथा नेतृत्व विकास से संबंधित व्यवहारिक अनुभव उपलब्ध हो सकें। अध्ययन क्षेत्र सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से विविधतापूर्ण होने के कारण शोध के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपयुक्त पाया गया।

3.6 जनसंख्या एवं निदर्शन

अध्ययन की समग्र जनसंख्या में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी सभी महिलाएँ सम्मिलित थीं। शोध के लिए 300 महिलाओं का चयन निदर्शन के रूप में किया गया। निदर्शन का चयन सरल यादृच्छिक निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया ताकि प्रत्येक सदस्य को चयनित होने का समान अवसर प्राप्त हो और अध्ययन के निष्कर्ष अधिक प्रतिनिधिक बन सकें।

3.7 आंकड़ों के स्रोत

अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया। प्राथमिक आंकड़े स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित कर प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त किए गए। द्वितीयक आंकड़ों के लिए पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, पत्रिकाओं तथा महिला सशक्तिकरण एवं स्वयं सहायता समूहों से संबंधित प्रकाशित साहित्य का उपयोग किया गया।



3.8 डेटा संग्रहण उपकरण

अध्ययन में संरचित प्रश्नावली को मुख्य उपकरण के रूप में अपनाया गया। प्रश्नावली में महिलाओं की सामाजिक पृष्ठभूमि, समूह सहभागिता, नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास, निर्णय-निर्माण क्षमता तथा सामुदायिक सहभागिता से संबंधित प्रश्न सम्मिलित किए गए। अधिकांश प्रश्न पाँच बिंदु लिकर्ट मापनी (Likert Scale) पर आधारित थे, जिससे उत्तरदाताओं की धारणा का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन संभव हो सका।

4. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

इस अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन हेतु 300 स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं का चयन किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, सहसंबंध तथा प्रतिगमन विश्लेषण की सहायता से किया गया। इसके अतिरिक्त शोध परिकल्पनाओं की जांच के लिए t-परीक्षण, सहसंबंध एवं प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग किया गया।

4.1 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल

सारणी 1: उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विवरण

विवरण	श्रेणी	आवृत्ति	प्रतिशत
आयु	18-30 वर्ष	72	24.0
	31-40 वर्ष	118	39.3
	41-50 वर्ष	78	26.0
	50 वर्ष से अधिक	32	10.7
शिक्षा	प्राथमिक	64	21.3
	माध्यमिक	98	32.7
	उच्च माध्यमिक	82	27.3
	स्नातक एवं अधिक	56	18.7



वैवाहिक स्थिति	विवाहित	238	79.3
	अविवाहित	34	11.3
	विधवा/अन्य	28	9.4
SHG सदस्यता अवधि	1-3 वर्ष	84	28.0
	4-6 वर्ष	126	42.0
	7 वर्ष से अधिक	90	30.0

सारणी 1 से ज्ञात होता है कि अधिकांश महिलाएँ 31 से 40 वर्ष आयु वर्ग (39.3%) की थीं। शिक्षा स्तर में माध्यमिक शिक्षित महिलाओं का प्रतिशत सर्वाधिक (32.7%) पाया गया। अध्ययन में 79.3 प्रतिशत महिलाएँ विवाहित थीं। स्वयं सहायता समूह में 4 से 6 वर्ष की सदस्यता रखने वाली महिलाओं की संख्या सर्वाधिक (42%) रही। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन में शामिल अधिकांश महिलाएँ पर्याप्त समय से समूह गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग ले रही थीं।

4.2 नेतृत्व क्षमता मापन का वर्णनात्मक विश्लेषण

सारणी 2: नेतृत्व क्षमता संबंधी कथनों का वर्णनात्मक विश्लेषण

कथन	माध्य	मानक विचलन
मैं समूह बैठकों में अपने विचार व्यक्त करती हूँ	4.18	0.76
मैं सामूहिक निर्णय लेने में सक्रिय भाग लेती हूँ	4.11	0.81
मुझे समुदाय का नेतृत्व करने में आत्मविश्वास है	4.06	0.84
मैं अन्य महिलाओं को प्रेरित करती हूँ	4.14	0.73
मैं सामाजिक समस्याओं पर आवाज उठाती हूँ	3.98	0.88
मैं स्थानीय कार्यक्रमों में नेतृत्व करती हूँ	4.09	0.79



समग्र माध्य = 4.09

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि नेतृत्व क्षमता के सभी आयामों का माध्य 4.00 के आसपास या उससे अधिक है। समग्र माध्य 4.09 प्राप्त हुआ, जो दर्शाता है कि स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता महिलाओं की नेतृत्व क्षमता के विकास में सकारात्मक भूमिका निभा रही है।

4.3. निर्णय-निर्माण क्षमता का विश्लेषण

सारणी 3: निर्णय-निर्माण क्षमता

कथन	माध्य	मानक विचलन
परिवार के आर्थिक निर्णयों में भागीदारी	4.12	0.74
बच्चों की शिक्षा संबंधी निर्णय	4.21	0.71
सामाजिक कार्यक्रमों में निर्णय	3.96	0.85
समूह संबंधी निर्णयों में सक्रियता	4.24	0.69
वित्तीय योजनाओं में योगदान	4.08	0.77

समग्र माध्य = 4.12

निर्णय-निर्माण क्षमता का समग्र माध्य 4.12 प्राप्त हुआ, जिससे स्पष्ट है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं में निर्णय लेने की क्षमता को सुदृढ़ बनाने में प्रभावी सिद्ध हुए हैं।

4.4 परिकल्पना परीक्षण

परिकल्पना 1

H₀₁: स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता का महिलाओं की नेतृत्व क्षमता पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता।

H₁₁: स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता का महिलाओं की नेतृत्व क्षमता पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।



सारणी 4: SHG सहभागिता एवं नेतृत्व क्षमता के मध्य सहसंबंध

चर	r-मूल्य	p-मूल्य
SHG सहभागिता एवं नेतृत्व क्षमता	0.742	0.000

सहसंबंध गुणांक ($r = 0.742$) उच्च धनात्मक संबंध को प्रदर्शित करता है। p-मूल्य 0.05 से कम (0.000) है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत तथा वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष: SHG सहभागिता महिलाओं की नेतृत्व क्षमता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

परिकल्पना 2

H₀₂: स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता और निर्णय-निर्माण क्षमता के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H₁₂: स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता और निर्णय-निर्माण क्षमता के मध्य महत्वपूर्ण संबंध है

सारणी 5: SHG सहभागिता एवं निर्णय-निर्माण क्षमता के मध्य सहसंबंध

चर	r-मूल्य	p-मूल्य
SHG सहभागिता एवं निर्णय क्षमता	0.698	0.000

प्राप्त सहसंबंध गुणांक 0.698 एक मजबूत धनात्मक संबंध को प्रदर्शित करता है। p-मूल्य 0.05 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

4.5 नेतृत्व क्षमता पर प्रतिगमन विश्लेषण

निर्भर चर: नेतृत्व क्षमता

सारणी 6: प्रतिगमन विश्लेषण

स्वतंत्र चर	बीटा (β)	t-मूल्य	p-मूल्य
SHG सहभागिता	0.684	14.27	0.000
आत्मविश्वास	0.421	8.96	0.000
निर्णय क्षमता	0.375	7.82	0.000



मॉडल सारांश

R	R ²	Adjusted R ²
0.812	0.659	0.653

प्रतिगमन परिणामों से ज्ञात होता है कि मॉडल का $R^2 = 0.659$ है। इसका अर्थ है कि नेतृत्व क्षमता में 65.9 प्रतिशत परिवर्तन उपरोक्त स्वतंत्र चरों द्वारा समझाया जा सकता है।

SHG सहभागिता का बीटा मान (0.684) सर्वाधिक पाया गया, जो दर्शाता है कि नेतृत्व क्षमता के विकास में इसकी भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।

4.6 विभिन्न शिक्षा स्तरों के आधार पर नेतृत्व क्षमता में अंतर

परिकल्पना 3

H_{03} : विभिन्न शिक्षा स्तरों की महिलाओं की नेतृत्व क्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

H_{13} : विभिन्न शिक्षा स्तरों की महिलाओं की नेतृत्व क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर है।

सारणी 7: ANOVA परीक्षण

स्रोत	SS	df	F	p
समूहों के बीच	18.74	3	5.87	0.001
समूहों के भीतर	315.26	296		
कुल	334.00	299		

$F = 5.87$ तथा $p = 0.001$ प्राप्त हुआ, जो 0.05 से कम है। अतः विभिन्न शिक्षा स्तरों के बीच नेतृत्व क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

4.8 प्रमुख निष्कर्ष

1. अधिकांश उत्तरदाता 31-40 वर्ष आयु वर्ग की थीं।
2. स्वयं सहायता समूहों में सक्रिय महिलाओं की नेतृत्व क्षमता का स्तर उच्च पाया गया।
3. SHG सहभागिता और नेतृत्व क्षमता के मध्य मजबूत धनात्मक संबंध ($r = 0.742$) प्राप्त हुआ।
4. SHG सहभागिता और निर्णय-निर्माण क्षमता के मध्य भी महत्वपूर्ण संबंध ($r = 0.698$) पाया गया।



5. प्रतिगमन विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि नेतृत्व क्षमता के विकास में SHG सहभागिता सबसे प्रभावशाली कारक है।
6. शिक्षा स्तर के अनुसार नेतृत्व क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।
7. अध्ययन से यह सिद्ध हुआ कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं के नेतृत्व विकास, आत्मविश्वास वृद्धि तथा सामाजिक सहभागिता को प्रोत्साहित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

5. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं की नेतृत्व क्षमता के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समूहों में सक्रिय सहभागिता से महिलाओं के आत्मविश्वास, निर्णय-निर्माण क्षमता, संचार कौशल तथा सामाजिक सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। अध्ययन के परिणामों ने दर्शाया कि स्वयं सहायता समूह केवल आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे महिलाओं को सामुदायिक एवं सामाजिक नेतृत्व के लिए भी तैयार करते हैं। समूह गतिविधियों के माध्यम से महिलाएँ विभिन्न सामाजिक एवं विकासात्मक कार्यों में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने में सक्षम बनती हैं। शोध में यह भी पाया गया कि समूह सहभागिता और नेतृत्व क्षमता के मध्य सकारात्मक एवं सार्थक संबंध विद्यमान है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं के सर्वांगीण विकास, सामाजिक सशक्तिकरण तथा नेतृत्व निर्माण के प्रभावी साधन हैं, जो समाज में समानता एवं समावेशी विकास को बढ़ावा देते हैं।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर., एवं सिंह, पी. (2024). स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के नेतृत्व विकास का अध्ययन। *ग्रामीण विकास शोध पत्रिका*, 18(2), 45–58।
2. वर्मा, एस., एवं यादव, एम. (2023). महिला सशक्तिकरण और स्वयं सहायता समूह: नेतृत्व क्षमता के संदर्भ में एक विश्लेषण। *भारतीय समाज विज्ञान समीक्षा*, 12(1), 67–79।
3. कुमारी, न., एवं चौधरी, वी. (2024). ग्रामीण महिलाओं में निर्णय-निर्माण क्षमता के विकास में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका। *सामाजिक अनुसंधान पत्रिका*, 21(3), 88–101।



4. तिवारी, ए., एवं मिश्रा, डी. (2022). स्वयं सहायता समूहों द्वारा महिला नेतृत्व निर्माण की प्रक्रिया: एक क्षेत्रीय अध्ययन। *महिला अध्ययन जर्नल*, 15(4), 102–115।
5. गुप्ता, आर., एवं पांडेय, एस. (2025). नेतृत्व विकास और आर्थिक आत्मनिर्भरता में स्वयं सहायता समूहों का योगदान। *भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था पत्रिका*, 20(1), 33–49।
6. सिंह, के., एवं देवी, आर. (2023). ग्रामीण समाज में महिलाओं की नेतृत्व भूमिका और स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव। *समाज एवं विकास*, 17(2), 55–70।
7. यादव, पी., एवं कुमार, ए. (2024). स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सहभागिता और सामुदायिक नेतृत्व का विकास। *भारतीय सामाजिक अध्ययन पत्रिका*, 14(3), 91–107।
8. चौहान, वी., एवं शर्मा, एल. (2022). महिला नेतृत्व क्षमता निर्माण में स्वयं सहायता समूहों की प्रभावशीलता। *शोध दिशा*, 11(2), 73–86।
9. पटेल, एन., एवं सिंह, जे. (2025). ग्रामीण महिलाओं के नेतृत्व व्यवहार पर स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव। *ग्रामीण समाजशास्त्र समीक्षा*, 19(1), 40–57।
10. राजपूत, एस., एवं वर्मा, पी. (2024). स्वयं सहायता समूह और महिला सामाजिक नेतृत्व: एक अनुभवजन्य अध्ययन। *भारतीय विकास अध्ययन जर्नल*, 13(4), 115–129।
11. शुक्ला, आर., एवं त्रिपाठी, ए. (2023). महिला आत्मविश्वास एवं नेतृत्व विकास में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका। *महिला विकास पत्रिका*, 16(2), 62–78।
12. कश्यप, डी., एवं यादव, आर. (2024). स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं में नेतृत्व कौशल का विकास। *सामाजिक परिवर्तन एवं विकास*, 10(3), 81–96।
13. मिश्रा, पी., एवं गुप्ता, एन. (2022). महिला सशक्तिकरण और नेतृत्व निर्माण की दिशा में स्वयं सहायता समूहों का योगदान। *भारतीय अनुसंधान समीक्षा*, 9(1), 54–69।
14. सिंह, एम., एवं चौबे, एस. (2025). स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक स्थिति एवं नेतृत्व क्षमता का मूल्यांकन। *समकालीन सामाजिक अध्ययन*, 22(1), 98–113।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250 3552**

15. पांडेय, के., एवं तिवारी, वी. (2023). ग्रामीण विकास एवं महिला नेतृत्व में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका। *विकास विमर्श*, 12(2), 71–85।
16. देवी, एस., एवं यादव, के. (2024). सामुदायिक सहभागिता और महिला नेतृत्व विकास: स्वयं सहायता समूहों के विशेष संदर्भ में। *भारतीय ग्रामीण अध्ययन पत्रिका*, 18(3), 121–136।
17. कुमार, वी., एवं शर्मा, पी. (2025). नेतृत्व क्षमता, आत्मनिर्भरता एवं स्वयं सहायता समूह: ग्रामीण महिलाओं का एक अध्ययन। *समाज विज्ञान एवं विकास शोध पत्रिका*, 14(1), 47–63।
18. त्रिपाठी, एस., एवं वर्मा, आर. (2024). स्वयं सहायता समूहों द्वारा महिला नेतृत्व विकास की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ। *भारतीय सामाजिक शोध जर्नल*, 20(2), 84–99।